क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भूगोल

सही अर्थों में यह भूगोल का प्रथम द्वैतवाद है। लेकिन वेरेनियस के कार्यों को माने तो यह भूगोल के अध्ययन उपागम से जुड़ा हुआ है। इस द्वैतवाद की शुरुआत 19वी शताब्दी के चौथे दशक में प्रारम्भ हुआ। चौथे एवं पाँचवे दशक में भौगोलिक विषय वस्तु के अध्ययन में इस द्वैतवाद का व्यापक प्रभाव था।

यूरोपीय अन्धयुग के बाद नवीन भूगोल की शुरुआत का श्रेय मुख्यता जर्मन भूगोलवेत्ता हम्बोल्ट तथा रिटर को जाता है। दोनो समकालिन थे और शैक्षणिक पृष्ठभूमि अलग-अलग होने के बावजूद दोनो ही चिन्तको मे भौगोलिक विषय वस्तु से आत्मीयता थी। अतः उन्होने भूगोल के विषय वस्तु को विकसित कर विश्वविद्यालय स्तर पर इसकी पढ़ाई प्रारम्भ की लकिन इसके अध्ययन प्रारम्भ होने के पूर्व ही अध्ययन के विधितंत्र को लेकर हम्बोल्ट तथा रिटर में मतभेद हो गया और यही मतभेद द्वैतवाद अर्थात् विधितंत्र से सम्बन्धित द्वैतवाद का प्रमुख कारण बन गया।

Scanned with CamScanner

हम्बोल्ट की प्रसिद्ध पुस्तक का नाम 'कौसमोस' था। जिसमें इन्होने भूगोल के छः सिद्धांतो को प्रस्तुत किया जिसमें क्रमवद्ध उपागम एक प्रमुख है । कौसमोस के अनुसार किसी भी विषय वस्तु का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वह भी समकलीन भूगोलवेता था लेकिन उन्होने क्रमवद्ध उपागम के वदले प्रादेशिक उपागम पर अधिक जोर दिया। अर्थात रिटर की पुस्तक अर्डकुण्डें में प्रदेश को भौगोलिक विश्लषण का आधार माना गया है। रिटर के अनुसार किसी भी प्रदेश के भौगोलिक अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि उस प्रदेश की सभी भौगोलिक इकाईओं का विश्लेषण किया जाए। जैसे यदि किसी प्रदेश की जलवायु का अध्ययन कारना हो तो उसे प्रादेशिक क्रमवद्धता में प्रस्तुत करने की जरूरत है लेकिन प्रादेशिक विश्लेषण में किसी भी प्रदेश की स्थलाकृति विशेषताओं से लेकर उसके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तक के अध्ययन की आवश्यकता है।

हम्बोल्ट की मान्यता भिन्न थी । उनके अनुसार किसी प्रदेश की जलवायु आंकड़ो का विश्लेषण पूर्ण नहीं होगा जबतक की उत्पति कारकों से लेकर उस जलवायु की विशेषताओं का क्रमिक विश्लेषण न प्रस्तुत किया जाय । क्रमवद्ध उपागम तथ्यों को क्रमवद्धता में रखकर विश्लेषण प्रस्तुत करता है जबकि प्रदेशिक उपागम में किसी निश्चित दिशा के अभाव में तथ्यो का मात्र विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है । जैसे –यदि किसी प्रदेश की जलवायु का अध्ययन करना है तो उससे सम्बन्धित मृदा ,वनस्पति तथा अन्य कारको का अध्ययन आवश्यक है ।

Martin जैसे भूगोलवेताओं की अवधारणा है कि ये दोनो उपागम सही अर्थो में एक दूसरे के पूरक है। जैसे – प्रादेशिक विश्लेषण ही तथ्यो का क्रमवद्ध विश्लेषण प्रस्तुत करता है । इसलिए रिटर का प्रादेशिक उपागम अप्रत्यक्ष रुप से हम्बोल्ट के क्रमवद्ध उपागम से मेल खाता है । चूँकि ये उपागम भूगोल में विभाजन की प्रवृति उत्पन्न कर रहे थे इसलिए नवीन भूगोलवेताओं ने दोनों उपागमों के बीच समन्वय और सहयोग पर जोर दिया है ।

Scanned with CamScanner